आधार पर सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज एक ही जाति का माना जाता था। जिनमें परस्पर कन्या लेन–देन व भोजन व्यवहार प्रचलित था।

गोत्रों में विभाजन :–

भारत में सभी ब्राह्मण किसी न किसी ऋषि कुल से सम्बन्धित थे जिनसे ये शिक्षा ग्रहण कर उनकी मर्यादाओं का पालन करते हुए संसार में जीवन यापन करते थे। इन विभिन्न कुलों से सम्बद्ध होने के कारण इनका फिर कई गोत्रों में विभाजन हुआ जिससे आज भी इनकी पहचान इन्हीं ऋषि कुल गोत्रों से होती है जैसे भारद्वाज, भार्गव, कश्यप, पारासर आदि तथा सभी सगोत्री ब्राह्मण एक ही ऋषि कुल से सम्बन्धित होने से ये परस्पर भाई–बहन होते हैं जिससे इनमें परस्पर कन्या लेन देन की मनाही कर दी। इस ब्राह्मण जाति का यह दूसरा विभाजन था।

स्थानों के अनुसार विभाजन :–

इस ब्राह्मण जाति का तीसरा विभाजन स्थानों के अनुसार हुआ। ये विभिन्न गोत्रों के ब्राह्मण भिन्न–भिन्न स्थानों पर बस गये जिससे उनके खान–पान, रीति–रिवाज व रहन सहन में भिन्नता आई। इस भिन्नता के कारण इनके छोटे–छोटे समूह बन गये जो अपने ही समूह में कन्या लेन–देन व भोजन व्यवहार करने लगे। इन्हीं स्थानों के नाम से इनका नामकरण भी होने लगा। सर्व प्रथम उत्तर भारत में गौड़ देश में रहने वाले अपने को गौड़ कहने लगे तथा दक्षिण भारत में द्रविड़ देश में रहने वाले 'द्राविड़ ब्राह्मण' कहलायें। गौड़ देश में बसने से पूर्व इनके दो वर्ग थे। पश्चिम में सरस्वती नदी के किनारे बसने वाले 'सारस्वत ब्राह्मण' कहलाते थे तथा पूर्वी भाग में बसने वाले 'उदीच्य' कहे जाते थे। बाद में इन गौड़ ब्राह्मणों के पाँच भिन्न–भिन्न स्थानों पर बसने के कारण इन स्थानों के नाम से इनको 'पंच गौड़' कहा जाने लगा जिनको सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, उत्कल और मैथिली ब्राह्मण कहा जाने लगा। इनके पूर्वजों को 'आदि गौड़' कहा जाता था जिनके और भी भेद हो गये। जैसे सनाढ्य, गयावाल, शाकद्वीपी, सरयूवारीण आदि। बाद में इन गौड़ों के और बारह भेद हो गये। ये छः जाति ब्राह्मण भी इसी आदि गौड़ सम्प्रदाय के है।

इस प्रकार दक्षिण भारत में रहने वाले ब्राह्मण भी पाँच भिन्न–भिन्न स्थानों पर बसने के कारण इन स्थानों के नाम से इनके भी पाँच भेद हो गये। जिनको 'पंच द्राविड़' कहा जाने लगा जिनको 'द्राविड़ ब्राह्मण' तैलंगाना ब्राह्मण; कर्नाटक ब्राह्मण, महाराष्ट्र ब्राह्मण, एवं गुर्जर देशीय (गुजरात) ब्राह्मण कहा जाने लगा। बाद में इनके और भी कई भेद हो गये; इन द्राविड़ों ने अपनी कला, संगीत, नृत्य, भवन निर्माण, मूर्तिकला, धर्म आदि कई क्षेत्रों में उच्चता प्राप्त की थी जिसकी झलक आज भी दिखाई देती है। शंकराचार्य, रमण, रामतीर्थ, जे. कृष्णमूर्ति तथा अनेक वैज्ञानिक, दार्शनिक आदि इसी सभ्यता की देन है। धार्मिकता के क्षेत्र में ये मुख्यतया शिवोपासक थे। वैष्णव धर्म का प्रचार यहाँ बहुत बाद में संभवतः भगवान राम के समय हुआ जिन्होंने स्वयं भगवान शिव की आराधना करके उनको प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था जिससे वे रावण का वध कर सके। बाद में इन्होनें तो रामेश्वरम् में शिव लिंग की स्थापना कर उसकी पूजा की थी।

किसी समय सम्पूर्ण भारत में शैष धर्म की ही प्रधानता थी जिसके आदि देव भगवान शिव ही थे। उत्तर भारत में कई ऋषि मुनि विभिन्न केन्द्रों पर निवास करते थे तथा वे ब्रह्मवाद का प्रचार करते थे। बाद

में इन्होने भी शैव धर्म को स्वीकार कर लिया जिससे एक मिले जुले धर्म का आविर्भाव हुआ। ये ऋषि–मुनि यज्ञ कार्य में भी निपुण थे।

द्रविड़ देशों के राजाओं द्वारा यज्ञ कार्यों के निमित्त उत्तर भारत से इन ऋषि–मुनियों को समय–समय पर बुलाया जाता रहा तथा यज्ञ सम्पन्न कराने के बाद इनको गाँव, भूमि आदि देकर यहीं बसा लिया जिससे इनको भी 'द्रविड़ ब्राह्मण' कहा जाने लगा। इनके आगमन से यहाँ भी वैष्णव धर्म का प्रचार हुआ तथा इन्होंने भी शैव धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार यहाँ भी मिली जुली सभ्यता का जन्म हुआ। बाद में इनकी भी कई उप जातियाँ बन गई।

गुजरात की ब्राह्मण जातियाँः–

गुजरात में प्रमुखतया दो जातियों का विशेष स्थान रहा है जिनमें एक थी "सहस्त्र औदिच्य" तथा दूसरी थी "नागर"। ये सहस्त्र औदिच्य एक शिव मंदिर की स्थापना के लिए उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों से आये थे जिनकी संख्या 1016 थी जो बाद में यहीं बस गये। बाद में भिन्न–भिन्न स्थानों पर बसने से इनकी भी कई उप–जातियाँ बन गई। जिनमें पालीवाल, सिरोहिया, आमेटा, गोरवाल आदि थे। बाद में और भी भेद हो गये जैसे मेणारिया, पाणेरी, नन्दवाना आदि।

गुजरात में दूसरी प्रमुख जाति "नागर" थी जिसकी गुजरात मे ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत में प्रतिष्ठा थी। यह जाति विद्वता व यज्ञ कार्यों में निपुण थी तथा समय आने पर युद्ध में भी भाग लेती थी इसलिए इसे कलम, करछी व बरछी का धनी माना जाता था। संगीत व नृत्य कला इसे विरासत में मिली थी। मल्हार राग गाकर इसी जाति की स्त्री ने तानसेन के ताप को कम किया था। नागरी लिपि का अविष्कार भी इसी जाति की देन है।

गुजरात आने से पूर्व ये ऋषि मुनि हिमालय क्षेत्र में निवास करते थे। वहाँ से ये कुरूक्षेत्र आये जहाँ से गुजरात के राजा चमत्कार ने इन्हें यहाँ बसा लिया। यही नगर बाद में 'वृद्व नगर' अथवा 'बड़नगर' कहलाया। ये ही ब्राह्मण "नागर ब्राह्मण" कहलाये। इनके अष्टकुल थें। बाद में इनके 64 गोत्र हो गये। इनके इष्ट देव भगवान हाटकेश्वर है।

नागर जाति का विभाजनः–

गुजरात की यह नागर जाति फिर कई वर्गों में विभाजित हो गई। गुजरात के अन्य राजाओं द्वारा इन नागरों को यज्ञ कार्य के निमित्त बुलाया जाता रहा व यज्ञ की समाप्ति पर इन्हें जमीनें आदि देकर वहीं बसा लिया जिससे इनके छः मुख्य भेद हो गये–बड़नगरा, विशनगरा, साठोदरा, कृष्णोरा, सांचोरा व प्रश्नोरा। इसके बाद इनके चार भेद और हो गये– अहमदाबादी, ब्राह्मा, बरड़ा व चित्तौड़ा। प्रश्नोरा नागरों का एक वर्ग जूनागढ़ में आकर बस गया जहाँ इनका हाटकेश्वर का मंदिर भी है जिसमें एक स्वयं भू शिवलिंग है जिसकी ये पूजा आराधना करते हैं। इन नागरों का परस्पर कन्या लेन देन बन्द हो जाने से ये सभी भिन्न – भिन्न जातियाँ बन गई। गुजरात में अन्य भी कई ब्राह्मण, जातियाँ थी जिनमें मोड़, श्रीमाली श्री गौड़, औदुम्बर आदि। इन परिवारों में कुछ परिवार मेवाड़ में आकर बस गये। जिनको मेवाड़ा नागर, चौबीसा, नागदा, भट्ट मेवाड़ा, त्रिवाड़ी मेवाड़ा कहा जाने लगा।